IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय संगीत के बदलते स्वरूप का इतिहास तथा वर्तमान स्थिति : एक ऐतिहासिक अध्ययन

रुपांश राणा – छात्र , शिक्षा विभाग ,हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला

सुरजीत सिंह – असिस्टेंट प्रोफेसर , राजकीय डिग्री महाविद्यालय नूरपुर

सारांश -

संगीत एक ऐसी व्यवस्थित ध्वनि जो हमारे अंदर रस उत्पती करे वह संगीत कहलाती है। गायन, वादन व नृत्य तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं। मधुर ध्वनियों का विशिष्ट नियमों के अनुसार और कुछ विशिष्ट रूप से होने वाले प्रदर्शन को संगीत कहते हैं। गाना, बजाना और नाचना प्रायः इतने पुराने है जितना पुराना आदमी है। बजाने और बाजे की कला आदमी ने कुछ बाद में खोजी-सीखी हो, पर गाने और नाचने का आरंभ तो न केवल हज़ारों बल्कि लाखों वर्ष पहले उसने कर लिया होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। गायन मानव के लिए प्रायः उतना ही स्वाभाविक है जितना भाषण। कब से मनुष्य ने गाना प्रारंभ किया, यह बताना उतना ही कठिन है जितना कि कब से उसने बोलना प्रारंभ किया है। परंतु बहुत काल बीत जाने के बाद उसके गायन ने व्यवस्थित रूप धारण किया। संगीत की उत्पत्ति के विषय में बहुत से विद्वानों के अलग अलग विचार हैं कुछ विद्वानों के अनुसार संगीत की उत्पत्ति शिव शंकर से हुई है तथा कुछ विद्वान संगीत की उत्पत्ति का आधार अन्य प्रकार से बताते हैं अभी तक संगीत इस नतीजे पर नहीं पहुंच पाया है कि असल में संगीत की उत्पत्ति कहां से हुई है।

शव्द बीज : शास्त्रीय संगीत, विदेशी आक्रमण, सांगीतिक सांस्कृतिक, अटूट

परिचय :

भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा है परन्तु कई तरह के विदेशी आक्रमणों के प्रभाव या यूँ कह लें कि विदेशी प्रभावों ने हमारी संस्कृति के साथ संगीत को भी प्रभावित किया है और हिन्दोस्तानी शास्त्रीय संगीत ने तरह -तरह के प्रभाव झेले हैं और आज भी उसी दौर से गुजर रहा है। इस समय हमारा परम कर्तव्य हो जाता है कि हम इसकी शुचिता को पवित्र रूप में अनुभव करें। सांगीतिक सांस्कृतिक तत्व को सबल बनाएं तभी हम इसको बचा पाएंगे । भारतीय संगीत विश्व के उस सार्वभौविक संगीत का प्रतीक है जिसने अपने अंदर बहु आयामी तत्वों को समाहित किया है और उन बहु आयामी तत्वों में जहां हमारे संगीत

आध्यात्मिकता का सर्वाधिक स्वरूप इसके माध्यम से झलकता है बल्कि वैज्ञानिक कसौटी पर भी खरा उतरता है। हमारे ऋषियों, मुनियों की साधना इस बात की ओर इशारा करती है कि जब हमारे संगीत की बात होती है तो उसमें सहजता, सौम्यता, सरलता, स्पष्ट रूप से सामने आती है। भारतीय संगीत को पूरे विश्व में उसके वैज्ञानिकता के आधार पर सम्मान प्रदान किया जाता है।

वैदिक काल में जहां संगीत के शास्त्रीय पक्ष को देखें तो वहीं उसके साथ प्रायोगिक पक्ष को यथावत् रखने का भारतीय प्राचीन ग्रँथकारों ने प्रयास किया है लेकिन विकास की इस धारा में संगीत की मूल आत्मा में अंतर आया है जिसके कारण मूलभूत संगीत का स्वरूप बदला है इसका मुख्य कारण तत्कालीन परिवेश और उसके अनुसार सामाजिक सोच रहा होगा।

भारत के परिपेक्ष की बात करें तो इसमें कोई शक नहीं है कि मौजूदा समय में संगीति कलाकारों को बहुत सम्मान भी मिल रहा है परंतु जिस प्रकार से संगीत को तवज्जो दी जानी चाहिए थी उस प्रकार से नहीं दी गई है आज भी संगीत शिक्षा आम जनमानस से दूर है हिमाचल प्रदेश समेत भारत के भाव से हिस्से ऐसे हैं जहां आज भी संगीत एक शिक्षा नहीं पहुंच पाई है हिमाचल की बात करें तो बहुत से कॉलेज आते हैं यहां शास्त्रीय संगीत तो है परंतु पढ़ाने वाले अध्यापक नहीं है हिमाचल के लगभग 50 से 60: कॉलेजों में संगीत की शिक्षा नहीं है हालांकि हिमाचल में लोक गायन का एक अपना स्थान है परंतु इसके बावजूद भी संगीत उस दिशा की ओर नहीं बढ़ रहा है जिस दिशा की ओर बढ़ना चाहिए था

शोध कार्य के उदेश्य :

1.भारतीय संगीत पर विदेशी प्रभाव का अध्ययन करना |

2. भारतीय विभूतियों के योगदान का अध्ययन करना |

3.भारतीय संगीत की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना |

शोध कार्यप्रणाली :

प्रस्तुत शोध पत्र में एक व्यवहारिक स्थिति का अध्ययन है जो तथ्यों पर आधारित है। इस शोध में आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक पद्धति के विभिन्न चरण रहे हैं। इसके आवश्यक तथ्यों के संकलन के लिए विभिन्न माध्यमिक स्त्रोतों जैसे शोध पत्र, पत्रिकाएं, इंटरनेट और संबंधित पुस्तकों आदि का प्रयोग किया गया है।

शोध कार्य की आवश्यकता :

13 वी शताब्दी में भारत पर विदेशी आक्रमणों का सिलसिला शुरू होता है | इन आक्रमणों से भारत की क्षेत्रीय अखंडता,राजनीतिक सम्बल ,आर्थिक सम्पन्नता और गौरवशाली संस्कृति ,साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा | कई मुस्लिम साहित्यकारों और कलाकारों द्वारा भारतीय साहित्य और संगीत के यंत्रो ,गायन की विधियों के साथ अपनी सभ्यता का मिश्रण कर नवीन साहित्य और वाध्य यंत्रो का निर्माण किया गया | भारतीय वाध्य

और संगीत कला के क्षेत्र में हुए इस मिश्रण का नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव जांचने के लिए यह शोध कार्य आवश्यक है |

भारतीय संगीत पर विदेशी प्रभाव :-

1. वैदिक काल :- भारत का संगीत उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव इतिहास है। इतिहास पर नजर दौड़ाएं तो भारतीय संगीत का उद्गम वेदों से हुआ मिलता है। वेद आर्य जाति के मूल ग्रन्थ थे जिनमें विश्व का समस्त ज्ञान भण्डारहै। वेदों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अत्यधिक मतभेद है परन्तु सभी विद्वान् वेद को विश्व का पुराना साहित्य मानते हैं । वैदिक युग भारत के सांस्कृतिक इतिहास में प्राचीनतम युग माना जाता है । वेदों का काल पू. ई . 600 पू. ई . 1500 तक माना गया है ।

   - ऋग्वैदिक काल में संगीत में गीत वाद्य तथा नृत्य तीनों दृष्टियों का पर्याप्त प्रचलन होता था तथा गीत प्रबन्धों को "गाथा" कहा जाता था जो धार्मिक कार्यक्रमों में गाए जाते थे।

   - यजुर्वेदिक काल में गायन के साथ वाद्यों का प्रयोग भी इस समय मिलता है जिसमें वीणा , वाण , तूणव , दुन्दुभि , भूमि दुन्दुभि , शंख तथा तबला आदि शामिल हैं । अश्वमेध आदि यज्ञों में मनोरंजन के लिए वीणादि वाद्यों का वादन किया जाता था ।

   - वेदों में सामवेद को संगीत का वेद माना गया है तथा संगीत कला में विकास की दृष्टि से सामवेद का एक विशिष्ट स्थान है । केवल यही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें भारतीय संगीत की आत्मा का स्वरूप दिखता है गन्धर्व वेद को सामवेद का ही उपवेद माना गया है । संगीत का मूल स्त्रोत सामवेद है । सामवेद एक ऐसा वेद है जिसके यज्ञों में देवताओं की स्तुति करते पाए जाते थे । इस काल में संगीत ऋषियों द्वारा पाला जाता था तथा कई ग्रन्थ भी इस काल में लिखे गए हैं। सामवेद के मुख्य रूप से दो भाग हैं आर्चिक एवं गान । आर्चिक में केवल ऋग्वेद – रचनाओं का संग्रह है । आर्चिक के दो भाग है – पूर्वाचिक व उत्तरार्चिका सामवेद का दूसरा भाग गान ग्रन्थ है । ऋषियों ने ऋग्वेद के आधार पर पहले गान बनाए फिर उन गानों का संग्रह करके अनेक ग्रन्थ बनाएँ। अतः वैदिक काल में सामाजिक दृष्टि से संगीत को उच्च मान्यता प्राप्त थी।

2. मध्यकाल : प्राचीनकालीन संगीत के अन्तर्गत वैदिक युग में संगीत से लकनिष्क गुप्त , मौर्य , बौद्ध , एवं हर्षवर्धन काल तक का संगीत आता है इसका विवरण निम्न प्रकार है ।भारत के वेदिक संगीत मे स्पष्ट रूप से परिवर्तन दिखाई पड़ता है । 13वीं शताव्दी में अलाउद्दीन खिलजी के समय अमीर खुसरो खिलजी के प्रमुख थे तथा संगीत के विशेष ज्ञाता थे उन्होंने भारतीय संगीत के वैदिक स्वरूप को धीरे -धीरे परिवर्तित कर अफगानी संगीत की छाप छोड़ते गए। यहीं से भारतीय संगीत के परिवर्तन को दिशा मिलती है। अमीर खुसरो ने, जो कि कुशल राजनीतिज्ञ थे, अपनी बौद्धिक क्षमता से ख्याल, तराना शैली वाद्यों में हमारे ही वाद्य वीणा का स्वरूप बदल कर उसे सितार बना दिया। कहने का तात्पर्य यह कि विदेशी संगीत का प्रभाव यहीं से देखा जा सकता है। हमारे वैदिक संगीत में निहित आध्यात्मिकता का स्वरूप यहां से परिवर्तित होता है। धीरेधीरे यह प्रभाव भारतीय संगीत की मूल आत्मा पर प्रहार करता गया जिसका फल आज के संगीत में हमें

दिखाई देताहै । जो परम्परा गुरुकुल के रूप में थी वह घराना परम्परा के रूप में विकसित हुई और उसका परिणाम यह हुआ कि मध्यकालीन समय में ख्याल, तराना, ठुमरी, दादरा आदि अनेकानेक गायन शैलियां तत्कालीन समय में परिवर्धित हुईं। यह वह समय था जब संगीत को राजशाही में राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ और संगीत का स्वरूप धीरे -धीरे बदल कर मनोरंजन प्रधान हो गया। बादशाह को प्रसन्न करना संगीतज्ञों का एकमात्र उद्देश्य था। उत्तर भारत में इस परम्परा ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया। आज संगीत का जो स्वरूप देखने को मिल रहा है, वह मध्यकाल की ही देन है।

अमीर खुसरो ने गायन , तबला आदि सभी में अपने अनुसार परिवर्तन किया। मेरा यह मानना है कि भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में आत्मसाद करने का माद्दा बहुत जबरदस्त है। हम बहुत आसानी से उस रंग में मिल जाते हैं।

3. आधुनिक काल :- २० वीं शताब्दी में संगीत का स्वरूप और बदला। हालाकिं 19वी शताब्दी में कई संगीतकारों ने संगीत के क्षेत्र में अमिट योगदान दिए परन्तु आज हम सभ्यता , संस्कृति के साथ संगीत की मर्यादा को कहीं पीछे छोड़कर पाश्चात्य संगीत की ओर बढ़ रहे हैं ऐसा कहना भी गलत होगा कि शास्त्रीय संगीत खो सा गया है क्योंकि इस क्षेत्र में भी बहुत आयाम स्थापित हुए हैं लेकिन आज लगभग श्रोताओं के मन मे शास्त्रीय संगीत की इच्छा खत्म होती जा रही है आज हमारे वाद्ययंत्रों में परिवर्तन देखने को मिलता है। इलैक्ट्रोनिक वाद्य जैसे तानपूरा, तबला, नगमा पेटी, की बोर्ड (सिन्थेसाइजर) आदि अनेकानेक वाद्यों ने अपना स्वरूप बदला। हालाकिं बदलते परिपेक्ष के साथ शास्त्रीय संगीत को विश्व स्तर पर पहचान मिली है परन्तु उसके मुकाबले लगातार भारत में पाश्चात्य संगीत का आधार भी बढ़ रहा है।

स्कूलों में स्थिति :

भारत की सांस्कृतिक विरासत समृद्ध रही है, जिसमें लोकगीतों, पारंपरिक वाद्ययंत्रों और संगीत का विशेष स्थान है। लेकिन सरकारी स्कूलों में संगीत शिक्षा का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। इस गिरावट के पीछे कई कारण हैं, जिनका विश्लेषण करना आवश्यक है। हिमाचल के अधिकांश सरकारी स्कूलों में संगीत नहीं पढ़ाया जाता। कुछ गिने चुने स्कूल हैं लेकिन वहाँ अध्यपक नियुक्त नहीं हैं। हिमाचल प्रदेश के सरकारी कॉलेजों में संगीत की पढ़ाई की व्यवस्था तो है, लेकिन इसे प्राथमिकता नहीं दी जाती। अधिकांश कॉलेजों में संगीत विभाग है, लेकिन शिक्षकों की कमी और संसाधनों के अभाव में इसकी गुणवत्ता लगातार गिर रही है। कई कॉलेजों में संगीत विषय तो उपलब्ध है, लेकिन इसे पढ़ाने के लिए पर्याप्त संख्या में योग्य शिक्षक नहीं हैं। संगीत प्रयोगशालाओं और वाद्ययंत्रों की कमी के कारण व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना मुश्किल होता जा रहा है। सरकारी कॉलेजों में प्रशिक्षित संगीत शिक्षकों की भारी कमी है। कई कॉलेजों में स्थायी शिक्षकों के बजाय गेस्ट फैकल्टी के सहारे ही पढ़ाई कराई जा रही है। संगीत शिक्षकों के रिक्त पद वर्षों से भरे नहीं जा रहे हैं, जिससे संगीत शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। कॉलेजों में संगीत विभाग के लिए बहुत कम बजट आवंटित किया जाता है। कई कॉलेजों में हारमोनियम, तबला, सितार, गिटार आदि वाद्ययंत्रों की कमी बनी हुई है। पुराने वाद्ययंत्र खराब हो चुके हैं और उनकी मरम्मत या नए उपकरण खरीदने के लिए कोई

ठोस व्यवस्था नहीं है। भारत के सरकारी कॉलेजों में संगीत शिक्षा का गिरता स्तर न केवल देश, प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर के लिए खतरा है, बल्कि इससे कई प्रतिभाशाली छात्रों का भविष्य भी प्रभावित हो सकता है। यदि सरकार और प्रशासन उचित कदम उठाएं, तो संगीत शिक्षा को फिर से मजबूत किया जा सकता है। योग्य शिक्षकों की भर्ती, पर्याप्त बजट, संसाधनों की उपलब्धता और छात्रों को प्रोत्साहित करने जैसी पहल से इस स्थिति को सुधारा जा सकता है। लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत को बचाने और आगे बढ़ाने के लिए हमें कॉलेजों में संगीत शिक्षा को एक नई दिशा देनी होगी।

निष्कर्ष :-

वैदिक शास्त्रीय संगीत फिर भी आनंददायी था इससे हमारे संगीत की मूल आत्मा की अनुभूति होती थी लेकिन आज का हमारा संगीत पूर्ण रूप से पाश्चत्य संगीत में रंगा है तथा जो संगीत कभी लोगों के लिए सुख की अनुभूति करवाता था कभी सुकून की ओर ले जाता था वो आज के समय में नही रहा। आज का संगीत पाश्चात्य रंग में रंगकर शोर समान हो चला है हमारी संगीत की मूल आत्मा का हनन हो रहा है। हमारे देश में इसकी स्थिति और परिवेश पर सार्थक चिंतन की आवश्यकता है। कहीं भौतिकतावादी संस्कृति की अंधी दौड़ में हम अपने आपको ही न भूल जाऐं, तब स्थिति और भी अधिक गम्भीर होगी। सावधान रहकर, अपने को इन स्थितियों से बचाना है तभी हम अपने सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक संगीत को बचा पाएंगे।

सुझाब-:

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत द्वारा संवेदनाओं की अनुभूति सहज है और उसके वैज्ञानिक पक्ष को सबल रखते हुए हम इसके स्वरूप का संवर्द्धन संरक्षण कर सकें, यह बहुत बडी बात होगी।
2. भारतीय शास्त्रीय संगीत को भारत के अन्य तमाम स्कूलों में लागू करना ताकि बचपन में ही छात्र शास्त्रीय संगीत के साथ जुड़ें।
3. स्कूल कॉलेज स्तर पर बेहतरीन सांगीतिक शिक्षा।
4. सभी सरकारी स्कूलों में संगीत को औपचारिक विषय के रूप में शामिल किया जाए।
5. अधिक संगीत शिक्षकों की भर्ती की जाए और उन्हें उचित प्रशिक्षण दिया जाए।
6. सरकारी स्कूलों में संगीत उपकरणों की उपलब्धता बढ़ाई जाए।
7. पारंपरिक हिमाचली लोक संगीत को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

सन्दर्भ सूची :-

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0_%E0%A4%96%E0%A4%BC%E0%A5%81%E0%A4%B8%E0%A4%B0%E0%A5%8B
2. डॉ मृत्युंजय शर्मा तथा टिंकू कॉल, संगीत मैनुअल(2002), HG पब्लिकेशन पेज न: 321
3. लाल ,अमृत.(2008). *संगीत शिक्षा.*पेज न: 54
4. https://www.exoticindiaart.com/book/details/amir-khusro-s-contribution-to-indian-music-mzb037/
5. https://saptswargyan.in/adunik-kaal-me-sangeeet/